Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

14

शमशेर बहादुर सिंह का काव्य प्रतिपाद्य एवं शिल्प

डॉ. काकासो बापूसो भोसले
रयत रयत शिक्षण संस्था का,डॉ पतंगराच कदम महा.
रामानंदनगर (बुर्ली) तह. पलूस, जि. सांगली

शमशेर बहादुर सिंह की कविताएँ यद्यपि समय समय पर प्रकाशित होती थी, उनकी कविताएँ पहली बार" दूसरा सप्तक में संग्रहित होकर सामने आई। उनकी प्रतिनिधि कविताओं का प्रथम संकलन दूसरा सप्तक की कविताओं का संकलन है। "दूसरा सप्तक" के अपने वक्तव्य में अपनी कविता के विषय में शमशेर ने कहा है"

"अपनी कविता में मेरी यह कोशिश रही है कि हरचीज की भावना की एक भाषा होती है जिसमें वह कलाकार से बात करती है उसे सीखूँ। जहाँ जहाँ वह कोशिश कामयाब होती देखी उन्होंने उसके प्रभाव को ग्रहण किया है।

शमशेर अपनी कविता सृजना में अनेक प्रभावों को स्वीकारते गए है, और उसे कबूल भी करते गए हैं। कविता के टेकनिक मैं वे अंग्रेजी प्रभाव से प्रभावित हैं, तो कविता की भाषा के लिए वे पंत के ऋणी हैं। उनके भावों को प्रभावित करने का कार्य निराला की परिमल तथा अनामिका की कविताने किया है। उर्दू की गजल शैली का भी स्वीकार उन्हो ने किया है। उलझने भावों के कारण सपनों की सी चित्रकारी, बातचीत का लहजा, चलती हुई लय आदि को कविने अपनी कविता के रुप और छंद का आधार बनाने का प्रयास किया है।

जन आंदोलन की और शमशेर आकर्षित अवश्य थे। कम्युनिस्ट आदर्शों से वे अपने को प्रभावित अवश्य मानते थे। उनके अंतस में विद्यमान किंतु अस्पष्ट सामाजिक आदर्शों को कम्युनिस्ट पार्टी के संगठित जीवन में एक सुस्पष्ट और सुंदर रुपमें उन्होंने देखा था। उनकी यह अनुभूति रही है कि वे उसे ठीक से पकड नहीं पाए हैं। उनकी नजर में इसके दो कारण है - १. जनता के हृदय से उनकी दूरी और २. मार्क्स वाद का उथला ज्ञान खासकर इतिहास ज्ञान की कमी।

आधुनिक हिंदी साहित्य की जो समृध्द परंपरा छायावादी काव्य धारा ने विकसित की थी शमशेर की कविता उसी काव्य परंपरा से विकसित हुई थी।

शमशेर के अनुसार कला का संघर्ष समाज के संघर्ष से अलग चीज नहीं हो सकती। सन १९४२ तक उनकी रुझान अपनी अकेली दुनिया के अंदर खींचते चले जाने की और था। इससे छुटकारा पाने के लिये उनका संघर्ष १९४२ - ४३ में आरंभ हुआ। वे जन आंदोलनों, जन भावनाओं को छूनेवाली कविता को अपनाने के अभिलाषी थे। लोकभाष के कवियोंके स्वर में स्वर मिलाना चाहते थे।

नई कविता के विषय में उन्होंने सिध्दांत रुप से कुछ बातों को स्वीकार किया है [१] नई कविता में कवि अपनी भावनाओं की सच्चाई खोज करता है। [२] ललित कलाएँ एक दूसरे में समाई हुई रहती है। [३] कवि की व्यक्ति गत रुचियाँ कला निखार में सहयोग देती है। [४] दो चार अन्य भाषाओं के ज्ञान से जीवन की पहचान और कला सौंदर्य के वर्धन में सहयोग मिलता है। [५] भाषा और कला के रुपों का पार नहीं है। [६] कला जीवन का सच्चा दर्पण है

परिवर्तन की तीव्र गति से शमशेर परिचित है। अतः परंपरा का विघटन करते हुए- नवीन प्राण स्वर अर्थात आधुनिकता को वे कविता में प्रतिपादित करते हैं।

व्यक्तिगत मनोभूमिपर शमशेर के काव्य में माननीय आस्था, सत-असत का आत्म संघर्ष, मृत्युबोध, अनास्था में आस्था की झलक, एकाकी पन की तटस्थता आदि विशेषताएँ प्राप्त हैं। वे अपने वैयक्तिक बोध में आधुनिकता के निकट हैं।

शमशेर की प्रेम विषयक कविताओं में उपभोग की ललक, आत्मविश्वास दृढता से अभिव्यक्त है। "चुका भी हूँ नहीं मैं" कविता में उनके इसी प्रवृत्ति के साक्षी है-

जब करूँगा प्रेम पिघल उठेंगे युगों के भूधर
उप्त उठेंगे सात सागर कहो सजे मैंने साज, अंभी।
निकट तम सबकी " अपर शौर्यों की " गहन मायामय / प्राप्त सुख तब बनोगी तब प्राप्य जय,

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

"थरथराता रहा" कविता में प्रेम की सात्विकता और "रुप" भाव की मर्म स्पर्शी अनुभूति अभिव्यक्त है।

थरथराता रहा जैसे बेंत मेरा काय - कितनी देरतक अपवाद मस्तक
एक पीपल पात मैं थरथर.

शमशेर की प्रेम विषयक कविताओं के विषय में मुक्ति बोध का यह अभिमत बडा सटीक है, कि शमशेर प्रणय जीवन के प्रसंग बध्द रसवादी कवि है और रस अस्वाद्य होता है, उसका भोग आनंद मय होता है।

उनकी प्रकृति-प्रेम की कविताएँ भी रोमांटिक रुपवादी रुझान के साथ ही पाठकों के सामने आती है-

हे अगोरती विभा"

"हे अगोरती विभा जोहती विभावरी है अमा उमामयी सावलीन बावरी "

"धिर गया समय का रथ कविता में प्रकृति को रुपाईत करते हुए शमशेर लिखते हैं -

मौन संध्या का दिए टीका रात काली आ गई है।

"सागर तट" कविता में प्रकृति अपनी सजीवता के साथ प्रस्तुत है

चाँदनी की ऊँगलियाँ चंचल
क्रोशिए से बुन रही थी चपल पेन झालर बेल मानो।

कवि शमशेर जन जीवन के साथ अपने आपको जोडते हुए भी प्रतित होते है - "बात बोलेगी" कविता में जीवन का वास्तव बिना किसी खटके वे उद्घाटीत करते है-

बात बोलेगी हम नहीं। भेद खोलेगी। बात ही। सत्य का मुख
झूट की आँखे क्या देखें।

झूठ की आँखों से सत्य मुँह तक पहुंचेगा ही नहीं तब मुँह सच बोलेगा तो कैसे ?

दैन्य दानव, काल भीषण, क्रूर स्थिति कंगाल बुध्दि, घर मजूर।

सामाजिक दैन्य का उद्घाटन इसी कविता में कवि ने किया। सत्य के रंग को स्पष्ट करते हुए कवि कहते हैं-

एक जनता का दुःख एक। हवा में उड़ती पताकाएँ अनेक।

एक सत्य के अनेक रंग जीवन में सामने आ जाते हैं-

एक जनताका अमर वर एकता का स्वर

राष्ट्र की एकता को स्वर कवि की दृष्टि में महत्व है। आधुनिकता और समकालक अनेक स्वरों में अपने आपको अभिव्यक्ति देनेवाली जनता में एकता नहीं वही तो उसके परिणाम भी दो टूक शब्दों में व्यक्त करते हैं-

अन्यथा स्वातंत्रय इति।

'ओ युग आ, मुझे और ले चल जरासा' कवितामें नए युग का आवाहन करते हुए कवि चाहते हैं कि युग कवि को आगे ले चले। नए युग के नए मानों के साथ कवि अपनी आत्मीयता व्यक्त करते हैं उनको अपनी आत्मा से चुमने को तत्पर है।

वह दर्शन वह कर्म वह शांति, वह मर्म जो युगों ने न समझा होगा वह तेरा और मेरा होगा।

जीवन में मनुष्य से दूरी का स्पष्ट अंकन कवि " मुझको मिलते हैं अदीब और कलाकार बहुत" कविता में प्रस्तुत किया है। वे स्पष्ट कहते हैं "लेकिन इन्सान के दर्शन है मुहाल।"

राग कविता एक बातचित लहजा प्रस्तुत करते हुए रहस्यात्मिकता भी उद्घाटित करती है। अपने राग में आखे मुंद जाती है तो एक सरलता का वातावरण अवतीर्ण हो जाता है। यह सरलता गिलोचंन की कविता से तोली गई है कवि की अनेक कविताएँ अनास्था मे आस्था के स्वर को व्यक्त करती है। जीवन के एकाकी पन, मृत्युबोध भी उनका विषय है।

"लौट के आ ओधार" कविता एक आस्था का स्वर उद्घाटित करती है। धार आगे बढ़ सकती है लौटकर नहीं आ सकती है। कवि की आस्था ही कवि को वह कहने के लिए संभवतः मजबूर करती है-

लौट के आओ पूल की पंखोडी फिर फूल में लग जा चूमता है कोई धूल का फूल, कोई हाय।

"एक पीली शाम" मृत्युबोध की कविता है। अपनी तपेदिक से मरणोन्मुख पत्नी के विषय में कवि कहते हैं-

पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता
शांत मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुख कमल
कृश म्लांन हारा-सा

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / November-December 2024 / VOL -01 ISSUE-III

शमशेर केवल शब्द शिल्पि नहीं है तो वे रंगशिल्पि भी है और कविता की सर्जना में उन का चित्रकार रूप चित्रण साससजता में सजग होता है तो अपने रंगो का उन्मुक्त उछाल भी दर्शाता है

थरथराराता रहा जैसे बैत

एक पीपल पात में, थरथर- रुपचित्र थरथराराता रहा कार्य बिंव भी

दृष्टव्य है-

मौन संध्या का दिए टीका रात काली आगशी है।(घिर गया है समय का रथ)

अथवा

अबगिरण अब गिरा वह अटका हुआ आँसू सांध्य ताटका- सा अतल में [रूपचित्र],

ऐसे अनेक चित्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिनके व्दारा अपनी- प्रतीक एवं बिबों की सफल प्रयोगशीलता के कारण शमशेर ने अपनी कविता को प्रतिपादय एवं उसका कलापक्ष भी - एक संपन्नता के साथ प्रस्तुत किया है।

अतः यह स्पष्ट है कि शमशोर अनेक प्रभावों से प्रभावित होकर भी अपनी राह अपने ढंगसे निर्मित करनेवाले कवि है।

संदर्भ :

१] तारसप्तक
२] हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधी कवि-मुरालीलाल शर्मा, सुरस
३] हिंदी के आधुनिक कवि - रवींद्र भ्रमर